हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL6**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक: 250* *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Arvind Pratap Singh

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): _____

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	5	0	6	0	7	3

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): अरविंद

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

प्रयास अच्छा है
अभ्यास करते रहें ।

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 133 टिप्पणी (Remarks): _____

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) "सतगुरु लई कमाँण करि बाँहण लागा तीर।
एक जु बाह्या प्रीति सूँ भीतरि रह्या सरीर।।"

सामासिक भाव के साथ-साथ कबीरदास के यहाँ साधनात्मक और आध्यात्मिक अर्थछाया पर भी बराबर ज़ोर दिया गया है। प्रस्तुत साखी श्यामसुंदर दास द्वारा सम्पादित 'कबीर ग्रंथावली' के "सतगुरु को अंग' शीर्षक से उद्धृत है।

प्रस्तुत साखी में आध्यात्मिक यात्रा में सतगुरु के महत्त्व को रेखांकित किया गया है।

कबीर का मंतव्य है कि ईशप्राप्ति में सतगुरु का महत्त्व अप्रतिम है। वे कहते हैं कि सतगुरु ने कमान से खींचकर मुझे ज्ञानरूपी ऐसा तीर मारा है कि तीर तो बाहर लगा है पर मेरा स्वत्व ईश्वर की प्रीति से आप्लावित हो गया है।

अर्थ यह है कि सतगुरु ने ज्ञानरूपी तीर के माध्यम से कबीर के सम्मुख सत्य का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रतिपादन कर दिया है, जिससे वे ईश्वर की ओर एकांत रूप में उन्मुख हो गए हैं।

काव्य-सौंदर्य

भाषा- पंचमेल सधुक्कड़ी (बाँग्ला-राज॰)

रस - शांतरस

छन्द - दोहा

अलंकार - अनुप्रास, रूपक

विशेष - सतगुरु के महत्त्व में कबीर प्रत्यय कहते हैं कि

"सतगुरु हमसूँ रीझिकर
कह्या एक प्रसंग।
बरस्या बादल प्रेम का
भीजि गया सब अंग।।

———x———

5½/10

Good

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) दूर करहु बीना कर धरिबो।
मोहे मृग नाहीं रथ हाँक्यो, नाहिंन होत चंद को ढरिबो।।
बीती जाहि पै सोई जानै कठिन है प्रेमपास को परिबो।
जब तें बिछुरे कमलनयन, सखि, रहत न नयन नीर को गरिबो।।
सीतल चंद अगिनि सम लागत कहिए धीर कौन विधि धरिबो।
सूरदास प्रभु तुम्हारे दरस बिनु सब झूठो जतननि को करिबो।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सूरदास कृत 'भ्रमरगीत सार' में गोपियों की विदग्धता और साक्षा-निर्गुण संवाद के मूलरूप में विरह की एक धारा प्रवाहित है और कृष्ण से गोपियों का यह विरह ही उसकी वास्तविक प्राणशक्ति है।

प्रस्तुत पद में सूरदास ने कृष्ण के विरह में गोपियों की विरक्षा और मानसिक स्थिति का मार्मिक वर्णन किया है।

गोपियाँ कहती हैं कि विरह की दशा का अर्थ तो वही जानता है जो विरह में पड़ा हुआ है। प्रेमरूपी पाश का यह बंधन अत्यंत कठिन है। ऐसा लगता है कि मृगों ने रथ खींचना बंद कर दिया है और न चंद्र ढलता है और न विरह की यह रात्रि व्यतीत होती

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है। जब से कृष्णा बिछड़े हैं, तब से यह शीतल चंद्र अग्नि के समान प्रतीत होता है और आँख से आँसू भी नहीं रुकते। हे कृष्णा! तुम्हारे दर्शन के बिना यह सब जगत व्यर्थ है। ऐसे में न धैर्य रखा जा रहा है और किसी भी पल का कोई लाभ नहीं।

काव्य सौंदर्य - भाषा - ब्रजभाषा
रस - विप्रलंभ श्रृंगार
छन्द - गेयपद
अलंकार - अनुप्रास, विरोधाभास

विशेष - गोपियाँ अन्यत्र कहती हैं:-

ऊधौ मन न भए दस बीस।
एक हुतौ सो गयो स्याम संग
को आराधे ईस।

———x———

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जाने दो वह कवि-कल्पित था,
मैंने तो भीषण जाड़ों में
नभ-चुबी कैलाश शीर्ष पर,
महामेघ को झंझानिल से
गरज-गरज भिड़ते देखा है,
बादल को घिरते देखा है

आधुनिक हिन्दी साहित्य में नागार्जुन जैसा रचना-वैविध्य कम ही देखने को मिलता है। प्रस्तुत गद्यांश उनकी प्रकृति-वर्णन पर केंद्रित कविता "बादल को घिरते देखा है" से उद्धृत है।

इस गद्यांश में कवि ने साहित्यिक परम्परा में हिमालय की कल्पना के मुकाबले अपने स्वानुभव के वर्णन को समक्ष प्रस्तुत किया है।

नागार्जुन ने कुबेर, अलकापुरी, मेघदूत के यक्ष आदि के वर्णन के माध्यम से भारतीय परम्परा का रेखांकन भी किया है और स्वानुभव के सामने रखकर इसकी तुलना भी। नागार्जुन कवि-कल्पना के समक्ष स्वानुभव

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को प्रधान मानते है। वे कहते हैं कि मैंने तो स्वयं प्रकृति का रौद्र रूप देखा है। यहां हिमालय में भीषण जाड़ों में आकाश-छूते कैलाश के शिखरों में मैंने बादल और बिजली को रौद्र रूप में भिड़ते देखा है।

काव्यसौंदर्य - भाषा - सरल तत्सम खड़ीबोली
रस - उत्साह का संचार लिए शांतरस
छन्द - ~~तुकांत~~ मुक्त (पर अंत में गीत का छन्द)
अलंकार - अनुप्रास

विशेष - इससे पूर्व भी नागार्जुन कहते हैं कि
" कहाँ गया धनपति कुबेर वह
कहाँ गयी उसकी वह अलका
नहीं ठिकाना कालिदास के
व्योमप्रवाही गंगाजल का।'

———x———

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) मुझे स्मरण है:
और चित्र प्रत्येक
स्तब्ध, विजड़ित करता है मुझ को।
सुनता हूँ मैं
पर हर स्वर-कम्पन लेता है मुझ को मुझ से सोख-
वायु-सा नाद-भरा मैं उड़ जाता हूँ।...

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"असाध्य वीणा" के माध्यम से अज्ञेय ने परम्परा और सर्जनात्मकता के सम्बंध में सर्वथा मौलिक दृष्टि का परिचय दिया है।

प्रस्तुत काव्यांश में प्रियंवद वीणा के माध्यम से किरीटी-तरु को स्मरण करता है। अप्रत्यक्ष रूप से संकेत है कि सर्जक कला-माध्यम के सम्मुख नत हो सम्पूर्ण कला-परम्परा को ही याद करता है।

इस स्मरण का स्वाभाविक परिणाम है कि परम्परा का माहात्म्य प्रियंवद को प्राच्छादित कर लेता है। किरीटी-तरु के माध्यम से प्रियंवद प्रकृति के विभिन्न रूपों का साक्षात्कार करता है और ऐसा हर रूप उसे स्तब्ध और विनीत करता जाता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है। प्रियंवद स्वयं अपने अस्तित्व और अहंकार से मुक्त होता जाता है और हल्का महसूस करने लगता है।

भाषा - तत्सम खड़ीबोली
रस - शांत
छन्द - मुक्त छंद (लय विद्यमान है)
अलंकार - अनुप्रास, उपमा (वायु-सा)

<u>विशेष</u> - इसी परम्परा के महत्व पर प्रियंवद अंत में कहता है -

"सुना आपने जो वह मेरा नहीं
वह तो सब कुछ की वपता थी।

5½/10

Copyright - Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) पिस गया वह भीतरी
औ' बाहरी दो कठिन पाटों बीच,
ऐसी ट्रैजेडी है नीच!!
बावड़ी में वह स्वयं
पागल प्रतीकों में निरंतर कह रहा
वह कोठरी में किस तरह
अपना गणित करता रहा
औ' मर गया...

मुक्तिबोध की कविताओं में 'बौद्धिक ईमानदारी' को साहित्यिक कसौटी के रूप में पुनः पुनः रेखांकित किया गया है। 'ब्रह्मराक्षस' नामक लम्बी कविता से उद्धृत प्रस्तुत काव्यांश में इसी कसौटी का जिक्र किया गया है।

ब्रह्मराक्षस बाहरी के साथ-साथ आंतरिक द्वन्द्व से भी ग्रस्त है। वह अपने ज्ञान और अपनी भूमिका के मध्य व्याप्त दूरी से तनाव में रहता है। दोनों ही प्रकार के द्वन्द्वों से वह त्रासिक नियति को प्राप्त कर जाता है और पिस जाता है।

अब बावड़ी का ब्रह्मराक्षस स्मरण करता है और बार-बार दोहराता है कि कोठरी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में किस प्रकार वह बौद्धिक उधेड़बुन में ही व्यस्त रहा और सामाजिक प्रदेय में असफल रहा है।

सौन्दर्य - मुक्तिबोध की भाषा परम्परा से सर्वथा नवीन है। तत्सम, प्रचलित, अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। करुणा की एक धारा इस कथांश में अंतर्व्याप्त है।

विशेष

- ब्रह्मराक्षस और शिल्प हमारे ही मन के दो रूप हैं। बौद्धिक ईमानदारी को जानकर भी उससे भागने वाला मन ही ब्रह्मराक्षस है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'असाध्यवीणा' 'सृजन तत्त्व' की गहन व्याख्या करने वाली कविता है- इस कथन के परिप्रेक्ष्य में इस कविता पर विचार कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'असाध्यवीणा' कविता के माध्यम से वस्तुतः अज्ञेय ने अपनी सृजन सम्बन्धी मान्यताओं को सम्मुख रखा है। स्थान-स्थान पर जैन बौद्धमत, अस्तित्ववाद और भारतीय धार्मिक परम्पराओं से प्रभावित होने के उपरांत भी वे एक प्रकार से सृजन-तत्त्व के सम्बंध में नितांत मौलिक उद्भावना करते हैं।

सर्वप्रथम काव्यहेतु के रूप में वे प्रतिभा, अभ्यास जैसे पारम्परिक तत्त्वों के साथ-साथ आत्मनिवेदन को भी महत्त्वपूर्ण मानते हैं। प्रियंवद में प्रतिभा, अभ्यास और ज्ञान तो है पर वह स्वयं को परम्परा को सौंप देता है-

वीणा के माध्यम से मैंने स्वयं को
सब कुछ को सौंप दिया था।

· Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

काव्य-सृजन की प्रक्रिया के लिए यह आवश्यक है कि कवि या रचनाकार परम्परा के सम्पूर्ण महत्त्व को समझे। त्रिलोचन वीणा के माध्यम से किरीटी तरु और प्रकृति के साथ उसके सम्बंध में चिंतन करने लगता है।

परम्परा और स्व के मूल्यांकन की यह प्रक्रिया दो तरफा है। इसी तरह त्रिलोचन परम्परा के आलोक में आत्मसंधान और आत्मशोधन करता चलता है।

"मौन त्रिलोचन साथ रहा या वीणा
नहीं स्वयं अपने को शोध रहा था।"

इस प्रकार परम्परा और व्यक्ति के सम्बंध विश्लेषण के माध्यम से अज्ञेय ने महत् सत्ता (समष्टि) और व्यष्टि तथा मौन और शब्द के सम्बंधों को भी विश्लेषित किया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

परम्परा के महत्त्व के स्वीकार और अहं के विलयन के माध्यम से प्रियंवद उस काष्ठवाद्य को बजाने में सफल रहता है।

"सुना आपने जो वह मेरा नहीं
न वीणा का था
वह तो सब कुछ की तथता
महाशून्य वह महामौन ---।"

वीणा के संगीत का प्रभाव सब पर अलग-अलग रूप में पड़ता है। अज्ञेय का मानना है कि सृजन-कर्म स्वतंत्रधर्मा होता है। इसीलिए कविता व्यक्ति को स्वधर्म के अनुसार प्रेरित कर उनके भावक्षेत्रों में प्रसार कर युग-परिवर्तन में सहायक होती है। राजा, रानी, प्रजा, दरबारी सभी को अपने-अपने स्वधर्म के अनुसार वीणा के स्वर प्रभावित करते हैं :-

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"डूब गए सब एक साथ
सब अलग-अलग धारों पार तिरे।"

इसी अर्थ में कहा जा सकता है कि ज्ञेन ~~बौद्ध~~ बौद्धमत और इलियट के सिद्धांतों से आगे अज्ञेय 'सृजन-तत्त्व' के सम्बंध में मौलिक उद्भावना प्रस्तुत करते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) "'मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का आत्मसंघर्ष' ब्रह्मराक्षस कविता का केन्द्रीय स्वर है।" विवेचन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मुक्तिबोध की अधिकांश कविताओं में "बौद्धिक ईमानदारी" की कसौटी को आधार बनाया गया है। मार्क्सवाद का प्रभाव तो मुक्तिबोध पर स्पष्ट है ही परन्तु वह स्वयं मार्क्सवाद को भी इस कसौटी पर कसते हैं।

'ब्रह्मराक्षस' कविता में ब्रह्मराक्षस के माध्यम से इसी कसौटी को 'मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के आत्मसंघर्ष' के रूप में प्रस्तुत किया गया है। मुक्तिबोध अन्यत्र कहते हैं-

"मैं उनका ही होता
जिनसे मैंने रूप भाव पाए हैं।"

यही मध्यवर्ग की विडम्बना है कि वह ज्ञानप्राप्त करने के बाद स्वार्थ-साधन में प्रवृत्त हो जाता है। शिक्षाप्राप्त मध्यवर्ग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को जानकारी है कि समाज को समता-स्वतंत्रता, बराबरी-भ्रातृत्व के आदर्श की ओर ले जाने के लिए क्या संघर्ष करना है। परन्तु निजी स्वार्थ उसे निम्नवर्ग की बजाय उच्चवर्ग से जोड़ देता है।

परन्तु उसके मन में सार्थकता और अपनी भूमिका का द्वन्द्व भी चलता रहता है। ब्रह्मराक्षस की मूल समस्या ही है-

" पिस गया वह बाहरी औ' भीतरी
दो कठिन पाटों बीच
ऐसी ट्रेजिडी है नीच।"

यह द्वन्द्व कभी तो उसे आत्मतुष्ट रखता है और कभी निरर्थकता बोध से भर देता है।

" कि किस तरह वह कोठरी में
अपना गणित करता रहा

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ओं मर गया।'

परन्तु लेखक ब्रह्मराक्षस का शिष्य बनने की कामना कर मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के नैतिक द्वन्द्व को भी मूल्यवान मानता है क्योंकि एक तो यह मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के संघर्ष से प्राप्त हुआ है और दूसरा कि इसके माध्यम से भी समाज समानता की ओर स्वतः अग्रसर होता है।

इस आत्मसंघर्ष से मुक्ति के लिए मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी को व्यापक सामाजिक परिवर्तन के संघर्ष में प्रतिभाग करना होगा।

8½/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) "'बादल को घिरते देखा है' कविता नागार्जुन के शिल्प कौशल का अप्रतिम उदाहरण है।" विवेचन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

एक कवि के तौर पर नागार्जुन में कबीर, तुलसी और निराला की परम्परा में रखा जा सकता है क्योंकि ऐसा विषय-वैविध्य दुर्लभ है। 'अकाल और उसके बाद' के समांतर 'बादल को घिरते देखा है' कविता के शिल्प को रखकर इस महत्त्व को समझा जा सकता है।

यह कविता तत्सम प्रधान ~~छायावादी~~ शब्दावली से पुष्ट होकर भी छायावादी संस्कारों से मुक्त है।

"अमल धवल गिरि के शिखरों पर
बादल को घिरते देखा है
छोटे-छोटे मोती जैसे
उसके शीतल-तुहिन कणों को
मानसरोवर के उन स्वर्णिम
कमलों पर गिरते देखा है।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस भाषा के प्रयोग से हिमालय के विशाल प्रभाव को साकार करने में मदद मिली है। वहीं बिम्ब-निर्माण की दृष्टि से नागार्जुन अत्यंत सफल सिद्ध हुए हैं। कविता में कोमल स्पर्श बिम्ब के साथ-साथ दुर्धर्ष प्राकृतिक बिम्बों की भी सृष्टि है -

"मैंने तो भीषण जाड़ों में
नभ-चुंबी कैलाश शीर्ष पर
महामेघ को झंझानिल से
गरज-गरज भिड़ते देखा है"

नागार्जुन ने मुक्त छन्द को स्थान-स्थान पर प्रयुक्त किया है परन्तु पदखण्ड के अंत में इसी स्थायी की आवृत्ति ने इस कविता में गीत का प्रभाव उत्पन्न कर दिया है। इस शिल्प में हमें छायावादी परम्परा के साथ-साथ प्रगतिवादी नवीनता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का संश्लेषण देखने को मिलता है। इसी रूप में यह कविता नागार्जुन के शिल्प-कौशल का अप्रतिम उदाहरण है।

8½/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'असाध्य वीणा' की काव्यभाषा का अनुशीलन करते हुए उसकी विशिष्टताओं को रेखांकित कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'असाध्य वीणा' को अज्ञेय की सृजनात्मकता का सार-रूप माना जाता है। 'सृजन-कर्म' से सम्बंधित उनकी मूल मान्यताएं इस कविता में निहित हैं। और जैसा कि विदित है कि स्वयं अज्ञेय के अनुसार 'काव्यभाषा' ही सृजन के केंद्र में है।

अज्ञेय का मत है कि "काव्य सबसे पहले शब्द है और सबसे अंत में भी यही बात बच रहती है कि काव्य शब्द है।" इसी अर्थ में अज्ञेय ने इस कविता में शब्द-चयन में अद्भुत संयम बरता है। एक तरफ इसमें प्रियंवद और केशकम्बली जैसे तत्सम शब्द हैं तो बदुली, बुद-बुद जैसे तद्भव शब्द भी। कविता मूलतः तत्सम भाषा में लिखी गई है।

विचार और ध्वनि का प्रभाव अधिक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

होने के कारण कविता को मुक्त छन्द में रचा गया है परन्तु इस लम्बी कविता में लय की एक ~~प्रतिध्वनि~~ व्याप्त है।

'असाध्य वीणा' की काव्यभाषा की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता मौन और शब्द के सम्बंधों में है। वीणा के बजने से पहले भी शांति थी और पश्चात भी। अज्ञेय का मानना था कि सभी शब्द और ध्वनियाँ मिलकर इस महत् मौन में समाहित हो जाती हैं और पुनः इसी से शब्दों की सृष्टि होती है।

"सुना आपने जो वह मेरा नहीं
न वीणा का था'
वह तो सब कुछ की तथता थी
महाशून्य
वह महामौन।

वीणा का प्रभाव सभी पर उनके स्वधर्म के

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अनुसार पड़ता है-

'इसको प्रश्न की सोंधी खुशबू
उसको मदुए का चुपचाप टपकना।'

अर्थात् शब्दों और भाषा का चयन अति महत्त्वपूर्ण है।

अमादपर्वता की काव्यभाषा की दो अन्य विशेषताओं का भी रेखांकन महत्त्वपूर्ण है। एक तो कथात्मक शैली में लिखे जाने से इस कविता में एक प्रवाह विद्यमान है और दूसरा बिम्ब-निर्माण की क्षमता। राजदरबार को साक्षात उपस्थित करने के साथ-साथ वीणा के प्रभाव के माध्यम से स्पर्श, श्रव्य, दृश्य - सभी प्रकार के बिम्बों की एक पूरी श्रृंखला उपस्थित की गई है।

11/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'ब्रह्मराक्षस' कविता में कवि ब्रह्मराक्षस का सजल-उर-शिष्य क्यों होना चाहता है? विश्लेषण कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ब्रह्मराक्षस कविता में ब्रह्मराक्षस के माध्यम से मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के आत्मसंघर्ष को व्यक्त किया गया है। ब्रह्मराक्षस 'बाह्य' और आंतरिक दोनों ही प्रकार के द्वंद्वों से ग्रस्त है- 'घिस गया वह बाहरी
और भीतरी दो कठिन पाटों बीच
ऐसी ट्रैजिडी है नीच।'

मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी अपनी ज्ञानप्राप्ति की साधना को सामाजिक भूमिका में परिवर्तित नहीं कर पाया है-

कि किस तरह वह
कोठरी में अपना गणित करता रहा
और मर गया।'

यह बेचैनी मरने के बाद भी ब्रह्मराक्षस में विद्यमान है। कवि ब्रह्मराक्षस का सजल-उर-शिष्य बनना चाहता है। क्योंकि एक तरफ तो वह ब्रह्मराक्षस के ज्ञान का प्रयोग कर सकेगा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

और इसी तरह स्वयं ब्रह्मराक्षस को उसके संघर्ष और ~~वास्तविक~~ बेचैनी का वास्तविक महत्त्व समझ में आ जाने से उसे मुक्ति भी मिलेगी। क्योंकि दोनो व्यक्तियों में गणितीय शांति इस जगत से संभव नहीं है और काम्य भी नहीं।

वह ब्रह्मराक्षस के संघर्ष को 'पूर्ण निष्कर्षों तक' पहुँचाना चाहता है। शिष्य बनकर ब्रह्मराक्षस की मुक्ति और उसके ज्ञान की सामाजिक उपयोगिता ही शिष्य का उद्देश्य है।

6/15

गहराई लाएं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'हरिजन गाथा' कविता की अंतर्वस्तु पर प्रकाश डालते हुए उसकी प्रासंगिकता का निर्धारण कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'हरिजन गाथा' कविता की रचना 1977 ई० में हुई। इस कविता में नागार्जुन ने बेलछी कांड की पृष्ठभूमि में एक दलित बच्चे के जन्म और भविष्य में उसे आशा की किरण के रूप में देखने का वृत्तांत प्रस्तुत किया है।

तेरह दलितों को जिंदा जलाए जाने की पृष्ठभूमि में कविता का प्रारम्भ हुआ था।

"ऐसा तो कभी नहीं हुआ था कि
एक नहीं, दो नहीं, तीन नहीं
तेरह के तेरह अभागे मनुपुत्र
जिन्दा झोंक दिए गए हों
प्रचण्ड अग्नि की विकराल लपटों में।"

इस दृश्य के उपरांत जिस बालक का जन्म होता है वह गरीबदास के अनुसार

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भविष्य की दलित चेतना की आशा है। कृष्ण के जन्म की तरह बालक को बाहर भेजने की तैयारी की जाती है। बुद्धू और बदरन गाँव के बुजुर्गों के रूप में प्रस्तुत है।

वस्तुतः नागार्जुन का मंतव्य यह है कि ऐसे अत्याचारों और ऐसी असमानता के मध्य जो पीढ़ी पैदा हो रही है वह भविष्य में क्रांतिकारी चेतना से लैस होकर परिवर्तन का वाहक बनेगी। बच्चे के जन्म को और बाद की परिस्थितियों का नाटकीय प्रस्तुतिकरण इसी महत्त्व को प्रतिपादित है

" दलित माओं के सब बच्चे
अब बागी होंगे
अभिशप्त होंगे वे अन्तिम
विप्लव में सहभागी होंगे।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) जीवन की स्थिति समय में है और समय प्रवाह है। प्रवाह में साधु-असाधु, प्रिय-अप्रिय सभी कुछ आता है। प्रवाह का यह क्रम ही सृष्टि और प्रकृति की नित्यता है।

अपने ऐतिहासिक उपन्यास 'दिव्या' में यशपाल स्थान-स्थान पर दार्शनिक संवाद भी प्रस्तुत करते चलते हैं। प्रारिश और दिव्या के पितामह प्रायः ही लेखक के मंतव्य को स्पष्ट करने वाले पात्रों के रूप में सम्मुख आते हैं।

प्रस्तुत गद्यांश में लेखक स्पष्ट करता है कि परिवर्तन ही सत्य है। जीवन जिस काल-प्रवाह से निर्धारित होता है वह गतिमान है। और काल-प्रवाह अर्थात इस जीवन में सत्य-असत्य, प्रिय-अप्रिय सभी कुछ सम्मुख आता है।

इस प्रवाह के माध्यम से ही पुरातन का पतन और नवीन का सृजन होता चलता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार प्रवाह के माध्यम से ही यह सृष्टि और जगत नित्य होता चलता है।

सांहित्यिक सौंदर्य

भाषा - तत्सम खड़ीबोली

शैली - संवाद शैली, विश्लेषणात्मक शैली।

विशेष - कामायनी में प्रसाद ने 'तप नहीं केवल जीवन सत्य' / करुणा यह क्षणिक दीन अवसाद।", और संवत्सर निबंध में अज्ञेय ने उपरोक्त मान्यता की ही पुष्टि की है।

6/10

6m

———X———

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कविता ही हृदय को प्रकृत दशा में लाती है और जगत् के बीच क्रमशः उसका अधिकाधिक प्रसार करती हुई उसे मनुष्यत्व की उच्च भूमि पर ले जाती है। भावयोग की सबसे उच्च कक्षा पर पहुँचे हुए मनुष्य का जगत् के साथ पूर्ण तादात्म्य हो जाता है, उसकी अलग भावसत्ता नहीं रह जाती, उसका हृदय विश्व-हृदय हो जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"कविता क्या है" में आचार्य रामचंद्र शुक्ल के साहित्यिक विचारों का विकास और संश्लेषण दोनों लक्षित किया गया है।

प्रस्तुत प्रश्न में आचार्य शुक्ल ने कविता, मनुष्य और जगत के सम्बंध को स्पष्ट करते हुए कविता के महत्त्व का प्रतिपादन किया है।

आचार्य शुक्ल के अनुसार कविता ही हृदय को क्षुद्र राग-द्वेषों से मुक्त कर उसका भाव-प्रसार करती है। जिससे वह स्वत्व से आगे बढ़कर मनुष्यत्व की भावना से विचार करने और महसूस करने में समर्थ होता है। कविता के माध्यम से जिस भावयोग की प्राप्ति होती है वह अपने सबसे उच्चतम रूप में मनुष्य को विश्व-हृदय से एकाकार कर

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

देता है। वस्तुतः शुक्ल जी का मंतव्य यह है कि कविता के माध्यम से हमारे सामान्य राग-द्वेषों का अंत होता जाता है और भावक्षेत्र का विस्तार होता जाता है।

भाषा- तत्समप्रधान

शैली- विचारात्मक

विशेष - कविता के औदात्य-प्रभाव का वर्णन है।

इससे पूर्व भी शुक्ल जी इस निबंध में कविता को 'हृदय की मुक्तावस्था के लिए कृत शब्द-विधान' के रूप में परिभाषित करते हैं।

——— x ———

5/2
/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) कर्त्ता से बढ़कर कर्म का स्मारक दूसरा नहीं। कर्म की क्षमता प्राप्त करने के लिये बार-बार कर्त्ता ही की ओर आँख उठती है। कर्मों से कर्त्ता की स्थिति को जो मनोहरता प्राप्त हो जाती है उस पर मुग्ध होकर बहुत से प्राणी उन कर्मों की ओर प्रेरित होते हैं। कर्त्ता अपने सत्कर्म द्वारा एक विस्तृत क्षेत्र में मनुष्य की सद्वृत्तियों के आकर्षण का एक शक्ति केन्द्र हो जाता है।

'श्रद्धाभक्ति' में आचार्य शुक्ल ने निरे-सिद्धांत और कर्त्ता आधारित काव्य में अंतर स्थापित करने का प्रयास किया है।

शुक्ल जी का मंतव्य है कि सिद्धांत ~~कथन~~ या बिना कर्त्ता के गुणों का कथन (जैसे निर्गुण साहित्य में) निश्चयात्मिका बुद्धि को तो संतुष्ट कर सकता है परंतु सामान्य जनता के लिए और भावप्रसार के लिए कर्त्ता पर कर्म का आरोपण करते हुए उसका प्रस्तुतीकरण ही उपयुक्त है।

उदाहरण के रूप में सगुण साहित्य में राम और कृष्ण के रूप में कर्त्ता की उपस्थिति है। इससे कर्मों को मनोहरता मिलती है, उसकी आकर्षण-शक्ति बढ़ती है और

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विस्तृत संसार में वे ज्यादा लोककल्याणकारी सिद्ध होते हैं।

भाषा - तत्सम

शैली - विश्लेषणात्मक

विशेष - ① निर्गुण और सगुण के सम्बंध में शुक्ल जी के विचारों का यह सैद्धांतिक आधार है।

② इसी आधार पर निबंध में लोकमंगल क्षात्रधर्म और सगुण भक्ति की चर्चा है

5/10 बेहतर करें।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) भारत समग्र विश्व का है, और सम्पूर्ण वसुन्धरा इसके प्रेम-पाश में आबद्ध है। अनादि काल से ज्ञान की, मानवता की ज्योति यह विकीर्ण कर रहा है। वसुन्धरा का हृदय–भारत–किस मूर्ख को प्यारा नहीं है?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारत-केंद्रित विचार ही गुलाबराय के निबंध 'भारतीय-संस्कृति' के केंद्र में है। इस निबंध में गुलाबराय ने साहित्यता और 'वसुधैव कुटुम्बकम' जैसे भावों के माध्यम से भारत के महत्व का प्रतिपादन किया है।

लेखक के अनुसार प्राचीन काल से ही भारत ज्ञान और संस्कृति का प्रसार इस जगत में कर रहा है। मानवता, परिवार, ज्ञान, साहित्यता, धर्म, दर्शन, शांति, अहिंसा, कला, मैत्री के रूप में भारत के सांस्कृतिक मूल्य सम्पूर्ण विश्व को प्रकाशमान कर रहे है।

ऐसा भारत सम्पूर्ण विश्व का है।

भाषा - तत्सम
शैली - प्रवाह

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

लेखक का विचार इस सुभाषित से मिलता-जुलता है-

"अयं निजः परोवेति
गणनां लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु
वसुधैव कुटुम्बकम्॥"

5/10

और गहराई में।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ड़) सामन्ती बन्धनों के खत्म होने पर सौन्दर्य और प्रेम की भावनाएँ अपने सहज रूप मे पल्लवित होंगी और नारी कवियों की नायिका मात्र न रह जाएगी। वह श्रम करने वाली, समान अधिकार वाली नागरिक भी होगी।

प्रस्तुत गद्यांश रामविलास शर्मा के निबंध "तुलसी साहित्य के सामंत-विरोधी मूल्य" से उद्धृत है।

इस प्रसंग में रामविलास जी ने सर्वप्रथम तो तुलसीदास पर नारी-उपेक्षा के आरोपों का प्रत्युत्तर दिया है और तत्पश्चात प्रगीत-सीमा की ओर संकेत करते हुए सामंती समाज और भविष्य की ओर इंगित किया है।

तुलसीदास के माध्यम से रामविलास जी स्पष्ट करते हैं कि नारी को मात्र नायिका के रूप में प्रस्तुत करना और उसे परिवार, समाज, मर्यादा के बंधनों में बाँधना वास्तव में सामंती समाज का लक्षण है। जैसे-जैसे समाज आगे बढ़ता जाएगा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ये बंधन ढीले पड़ते जाएँगे। तब नारी को समानता का पद प्राप्त होगा।

भाषा - सरल, प्रवाहमयी

शैली - विचारात्मक

<u>विशेष</u> - सामंती समाज में नारी की स्थिति के विषय में तुलसी की मार्मिक अभिव्यक्ति है -

"कत बिधि सृजी नारि जग माँही।
पराधीन सपनेहु सुख नाहिं।

5/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

"A3"

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) अज्ञेय के निबंध 'संवत्सर' में अनुस्यूत चिंतन पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अज्ञेय के निबंध 'संवत्सर' में सार-रूप में अज्ञेय की कालचेतना स्पष्ट की गई है। स्थान-स्थान पर अज्ञेय ने शाश्वत-नश्वर, सृजन, कविता और प्रकृति-जगत्-जीवन के बारे में भी अपनी मान्यताऐं स्पष्ट की है।

सर्वप्रथम अज्ञेय ने 'ध्यान देने' और 'दृष्टि जाने' के अंतर को रेखांकित किया है। ओस और प्रातःकालीन यात्रा के माध्यम से वे कहते हैं कि जहाँ सामान्य व्यक्ति नश्वरता और क्षणभंगुरता को देखता है वहीं उनकी दृष्टि शाश्वतता की ओर ले जाती है।

इस निबंध में अज्ञेय जैन बौद्धमत, पाश्चात्यकारित्व और भारतीय दार्शनिक परम्परा से प्रभावित है। उनके अनुसार इस

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संसार में जो कुछ भी नष्ट होता है या मृत्यु को प्राप्त होता है वह किसी न किसी रूप में प्रकृति के पंच तत्वों में समाहित हो जाता है।

जैसे- मृत्यु के बाद दाहकर्म से शरीर वास्तव में मेघ, वर्षण, मृदा की उर्वरा शक्ति में समाहित हो जाता है।

इसी अर्थ में प्रदेय का महत्व है कि कुछ भी व्यतीत या नष्ट नहीं होता। जो अतीत में है, वह वर्तमान और भविष्य दोनों में शामिल है। यही भारत में कालचक्र और कालजयी चक्रीय अवधारणा है।

एक कविता के माध्यम से वे अपनी बात स्पष्ट करते हैं

"झरना: झरता पत्ता
ही डाल से
भटक गया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस कालचक्र में सार्थकता के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति अपने स्वधर्म की पहचान करे और सृजनधर्मिता में संलग्न हो। 'जिज्ञासा' को ऋषियों ने सृजन के मूल में माना है क्योंकि इनके अनुसार यह जरूरी नहीं है कि सभी प्रश्नों का उत्तर हो ही।

कुछ प्रश्नों तक पहुँच जाने में ही व्यक्ति की सार्थकता है।

इस रूप में 'संवत्सर' में अनुस्यूत चिंतन परम्परा और मौलिकता के समन्वय से उपजा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कुबेरनाथ राय के निबंधों की विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'कुबेरनाथ राय' हिंदी साहित्य के ललित निबंधकारों में से प्रमुख है। विद्यानिवास मिश्र की तुलना में वे द्विवेदी जी से कम प्रभावित दिखते हैं और मौलिक उद्भावनाएं प्रदर्शित करते हैं।

'प्रिया नीलकंठी' ~~रसआखेटक~~ गंधमादन, विषादयोग, त्रेता का वृहत्त साम' और कामधेनु, निषाद-बांसुरी उनके प्रमुख निबंध संग्रह हैं।

इन निबंधों में कुबेरनाथ राय व्यक्तित्व-व्यंजकता के साथ-साथ जीवन-सत्य की खोज में भी प्रवृत्त होते हैं जैसे 'उत्तराफाल्गुनी के आस-पास' निबंध में व सर्जनात्मकता को जीवन की सार्थकता के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

जीवन के विविध पक्षों का अंकन, भाषाविज्ञान, संस्कृत साहित्य व पश्चिमी दर्शन की पड़ताल,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तत्सम भाषा, विश्लेषणपरक शैली और बौद्धिकता का पुट उनके निबंधों की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ हैं। जैसे- 'उत्तरकालजुनी के आस-पास' में ययाति, परिजाति, देरिदा, मार्क्स तक के प्रसंग हैं और सभी उक्तियों को वे मानवीय मूल्य व अस्मिता की कसौटी पर कसते हैं।

7½/15

और गहराई लाएँ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation
दृष्टि The Vision

(ग) "'चिन्तामणि' के निबंधों में प्रौढ़ चिन्तन, सूक्ष्म विश्लेषण और तर्कपूर्ण विवेचन का चरम आदर्श लक्षित होता है।" विवेचन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'चिन्तामणि' को आचार्य रामचंद्र शुक्ल के चिन्तन का सार कहा जाता है। यह सत्य है कि चिन्तामणि के निबंधों में प्रौढ़ चिंतन, सूक्ष्म विश्लेषण और तर्कपूर्ण चिंतन का आदर्श लक्षित होता है।

वस्तुतः चिन्तामणि के निबंधों को तीन कोटियों में वर्गीकृत किया जा सकता है। प्रथम कोटि में मनोविकार परक निबंध है - 'भाव या मनोविकार', 'ईर्ष्या', 'भय', 'लज्जा और ग्लानि', 'श्रद्धा भक्ति' और 'कविता क्या है?' इन निबंधों में शुक्ल जी ने विभिन्न मनोविकारों के सूक्ष्मतम भेदों की भी चर्चा की है. उन्हें परिभाषित किया है और सामाजिक उपादेयता स्थापित की है।

मनोविकारों का सूक्ष्म विश्लेषण और तर्कपूर्ण चिंतन के बाद वे अपनी काव्यशास्त्रीय

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मान्यताओं की ओर प्रवृत्त होते हैं। इस कोटि के निबंधों में प्रमुख हैं - 'रसात्मक बोध के विविध रूप', 'काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था' और 'साधारणीकरण और व्यक्ति वैचित्र्यवाद तथा 'कविता क्या है'।

इन निबंधों में शुक्ल जी ने सभी मनोभावों के विश्लेषण का उपयोग किया है और सूक्ष्म विश्लेषण के उपरांत रसवादी सिद्धांत की आधुनिक लोकमंगलवादी व्याख्या प्रस्तुत की। साथ ही कविता की भूमिका अलंकार, बिम्ब, काव्यभाषा आदि पर तार्किक विचार सामने रखे।

तीसरी कोटि के निबंध - 'भारतेन्दु हरिश्चंद्र', 'तुलसी की भक्ति साधना', व 'मानस की धर्म भूमि' वास्तव में उपरोक्त दोनों प्रकार की कोटियों का समागम है। यहाँ शुक्ल जी व्यावहारिक आलोचना में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रवृत्त होते हैं और आगुण भक्ति व तुलसीदास के महत्त्व का प्रतिपादन करते हैं।

प्रौढ़ चिंतन, सूक्ष्म विश्लेषण और तर्कपूर्ण विवेचन का ही परिणाम है कि उनकी सैद्धांतिक और व्यावहारिक आलोचना में ~~अभाव~~ अभेद -सा है।

और बेहतर बनाएँ

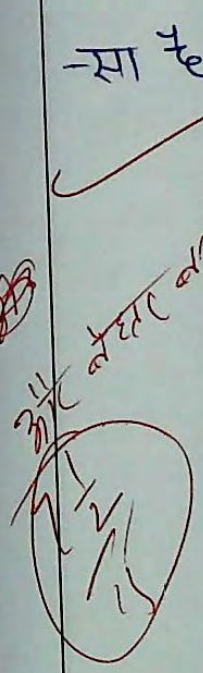

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation